P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-3* ISSUE-4*(Supplementary Issue) July- 2018
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

संस्कृत वाड्.मय में नाट्यशास्त्र की उपयोगिता

माधवी शर्मा
प्राचार्या,
डी. बी.(पी. जी.) महाविद्यालय,
खेरली, अलवर

संजय मेहरा
शोधार्थी,
डी. बी.(पी. जी.) महाविद्यालय,
खेरली, अलवर

सारांश

भरत की शाश्वत् साधना का परिनिष्ठित परिणाम है नाट्यशास्त्र। बिना नाट्यशास्त्र के भारतीय नाट्य कला की कल्पना नहीं की जा सकती, पर वह न केवल नाट्य कला ही अपितु काव्य, संगीत एवं नृत्य आदि विभिन्न ललितकलाओं का भी विष्वकोष हैं। भारतीय कलाओं के इस विशाल कोष रचना से पूर्व भी भारतीय जीवन में कला की विभिन्न विधियाँ थी पर अविकसित। नाट्य का उदभव, नाट्य की रचना, नाट्य मंडप, नाट्य का अभिनय आदि विभिन्न विषयों का इतना परिनिष्ठित और व्यापक विवेचन न तो पहले हुआ न बाद में ही। वस्तुतः भरत के लिए 'नाट्य' शब्द अत्यंत व्यापक है। कोई ऐसा ज्ञान, कोई ऐसा शिल्प, कोई ऐसी विद्या, और न कोई ऐसी कला है, जिसका नाट्य में उपयोगी नहीं होता, मूर्ति, चित्र, संगीत, नृत्य और काव्यकलाओं के अतिरिक्त भवन–निर्माण, अंग प्रसाधान, आभरण–रचना, केष–विन्यास, वस्त्र–रंजन, अस्त्र–षस्त्र रचना और पुस्तकविधि आदि न जाने कितने शिल्पों का प्रयोग रंगशिल्पी किया करते हैं। इन शिल्पों कलाओं के समानयन से नाट्य–कला को पूर्णता प्राप्त होती है।

मुख्य शब्द : परिनिष्ठित, आभरण, रंजन, समानयन, स्तंभ, प्रवाहमान, मर्म, विन्यास, समुच्चय, कालखंड, कालजयी, अनुगूँज।

प्रस्तावना

संस्कृत वाड्.मय में नाट्यशास्त्र की परंपरा सहस्त्रों वर्ष पुरानी है वैदिक यज्ञों तथा वैदिक समाज के अनुष्ठानों से ही इस परंपरा के बीज हमें दिखाई देते है। ऋग्वेद में आये अनेक पुरूरवा–उर्वषी, यम–यमी, इन्द्र अदिति–वामदेव, इन्द्र मरूत, अगस्त्य–लोपामुद्रा आदि संवाद सूक्त प्राचीन नाट्य का ही रूप है।

संस्कृत वाड्.मय में जब ललित कलात्मक साहित्य का विकास हुआ तो उसके निरूपक साहित्यालोचन की भी प्रणाली विकसित हो चली उस विषय पर आज तक की उपलब्ध प्राचीनतम सामग्री में नाट्यशास्त्र का प्रथम स्थान है।

भारतीय नाट्यशास्त्र में नाट्यकला का सर्वप्रथम विवेचन भरतमुनि के 'नाट्यशास्त्र' में मिलता है भरतमुनि का नाट्यशास्त्र साहित्य कला में उत्कृष्ट रूप नाट्य का प्रतिपादक है भरत के अनुसार नाट्य एक ऐसा क्रीडनीयक है जो देखने व सुनने के योग्य है धर्म, अर्थ, यष प्रदाता, सर्व शास्त्रार्थ सम्पन्न में नाट्यशास्त्र पञ्चम वेद भी कहलाता है।

नाट्यकला के विकास में आचार्य भरतमुनि का स्थान सर्वोपरि माना जाता है। उनके बाद उपलब्ध नाट्ककारों में भास को सर्वप्रथम नाटककार के रूप में स्वीकार किया गया है इसके पश्चात् कालिदास, शुद्रक, हर्षवर्धन, भवभूति, विषाखदत्त, भट्टनारायण, अनंगहर्ष, मयूराज, राजषेखर, दिंगनाग आदि प्रसिद्ध नाट्यकार आते हैं।

भरत का नाट्यशास्त्र ही सबका स्त्रोत है लेकिन यही समुद्र भी है किसी अन्य आचार्य ने भरत से आगे बढ़कर नाट्यशास्त्र के विविध तत्वों को और अधिक एवं विषद विवेचन नहीं किया है। संस्कृत वाड्म.य के इतिहास में एक ऐसा युग आया, जब साहित्यिक विषयों के शास्त्रीय विवेचन का आरम्भ होता है। भारतीय नृत्य की जितनी भी प्रचलित शास्त्रीय पद्धतियाँ है ओडिसी, कुचिपुड़ी, मणिपुरी, मोहिनीअट्टम, कथकली, कुटियाट्टम, कत्थक सब के तार भरत के नाट्यशास्त्र से जुड़े हुए है। उत्तर भारतीय कत्थक के परिधान और उसमें पैर की भूमिका है वह भरतेतर के प्रभाव है। भरत का नाट्यशास्त्र जिसके तत्व न्यूनाधिक मात्रा में सभी में विद्यमान है। भरत ने नृत्य की जिन भाव–भंगिमाओं का विषद वर्णन किया है वे शास्त्रीय नृत्य परंपरा में आज भी यथावत् संपादित हो रही है।

नाट्यशास्त्र काव्यकला, संगीतकला और नृत्यकलाओं का विष्वकोष है। भारत के सांस्कृतिक इतिहास में भरत का व्यक्तित्व विलक्षण है। इनकी चिन्तनधारा ने सदियों तक नाट्य, नृत्य, संगीत, काव्य और मूर्तिकला को प्रेरित

किया भरत ने भारत की समस्त कलाचेतना को अपनी नव–नवोन्मेषषालिनी कल्पना से सदियों तक अनुप्रमाणित एवं अनुरंजित किया। 'भरतनाट्यम' और 'कत्थकली' की मुद्राओं एवं भाव समृद्ध साधना में भरत द्वारा कल्पित कला की मधुर झंकार आज भी सुनाई देती है। अतः भारतीय कला का इतिहास भरत की सतत् प्रवाहमान विकासषील चिन्तनधारा का ही समावेष है। भरत ने सदियों तक इन कलाओं के प्रेणास्रोत के रूप में वीर काव्य की तरह ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य किया है।

नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरत को नाटक के क्षेत्र में हम भले भूल गये हों, शास्त्रीय नृत्य और शास्त्रीय संगीत के क्षत्रों में आज भी वैसे ही मानक बने हुए है, जैसे आज से दो हजार साल पहले रहे होगें विषेषकर दक्षिण भारत में, जहाँ की जमीन ललित कलाओं के लिए विषेष उर्वर रही है, भरत का नाम हर कला–साधक की जबान पर मिलेगा। ललित–कलाओं के समुच्चय पर भरत के नाट्यशास्त्र जैसी समग्र कृति संसार के किसी अन्य भाषा में नहीं है। उन्होंने इस विषाल ग्रन्थ ने दो सहस्त्राब्दियों से अधिक समय से निरंतर प्रवाहित भारतीय कला–धारा के लिए अजस्त्रस्त्रोत का काम किया है। इस सुदीर्घ कालखंड़ में भारतीय नृत्य, संगीत, नाटक, मूर्तिकला, चित्रकला और साहित्य तक जो काम हुआ है उसमें इस कालजयी कृति की अनुगूँज सर्वत्र विद्यमान है मंचीय और ललित–कलाओं के लिए संस्कृत वाड्.मय में भरत का स्थान पूर्वपुरूष जैसा है।

वर्तमान में देश के विभिन्न भागों में प्रचलित शास्त्रीय नृत्य की पद्धतियों का अपना इतिहास और उनकी विषिष्ट स्थानीय पहचान होने के बावजूद उनका विगत में भारतीय नाट्यशास्त्र से जुड़ा होना और जीवन रस ग्रहण करना वह बिंदु है जो हमारी राष्ट्रीय और सांस्कृतिक एकता को सबल प्रदान करता है। उसे दृढ़ करता है, यह सांस्कृतिक एकता हमारी राष्ट्रीय पहचान देती है तथा आधुनिक संस्कृत नाटक में शिल्प, तकनीक विषय की विविधता से नई उद्भावनाएं हो रही है। आज संस्कृत नाटक का केंन्द्र बिंदु केवल रस न होकर कोई अमिट घटना, विचार, समस्या या भाव हो सकता है आज नाटक से कोई भी क्षेत्र अछूता नहीं है। संस्कृत नाटक लगातार प्रगति और क्रांति की आवाज उठा रहे है आधुनिक नाटकों में लगातार विस्तार करता हुआ संस्कृत वाड्.मय रूपी वट–वृक्ष फल–फूल रहा है और समृद्धि को प्राप्त कर रहा है। भरतमुनि का नाट्यशास्त्र का अपने आप में एक पूर्णतः व्यवस्थित एवं व्यापक ग्रन्थ है, जिसमें हर अंग को बारीकी और विस्तार में समझाया गया है। यह ग्रन्थ न सिर्फ आज बल्कि हर यूग में हर काल में प्रासंगिक रहेगा। संचार के क्षेत्र मे विष्व स्तर पर पढ़ा जाने वाला साधारणीकरण का सिद्धान्त भी इसी से उत्पन्न है। यह एक ऐसा शास्त्र है जो रंगमंच और अन्य कलाओं का एक प्रमुख स्तंभ है। यह एक ऐसा मार्ग है जो जीवन में नई कल्पनाओं को जन्म देगा। अभी भी भारतीय नाट्यकला और संस्कृति के क्षेत्र में भरतमुनि के महत्त्वपूर्ण अवदान और उसकी जीवन्त उपयोगिता पर जमकर विचार और पुनर्मूल्यांकन की नितान्त आवष्यकता है। हमारी कठिनाई यह है कि हर छोटी–बड़ी कला समस्या पर प्रकाष के लिए पष्चिम की ओर ही अभिमुख हो जाते है। हम नाट्यकला के मर्म के सम्बन्ध में उन रतनों को अपनी दामन में भी तलाश सकते।

निष्कर्ष

भरतमुनि ने जिस नाट्यशास्त्र का निर्माण किया है वह नाना प्रकार के भावों से समन्वित है, विविध प्रकार की अवस्थाएँ इसमें हैं, और यह लोक चरित्र का अनुसरण करता है। नाट्यशास्त्र का उद्देष्य नाट्य दुख से थकावट से तथा षोक से पीड़ित दीन दुखियों के लिए विश्राम देने वाला है। भरतमुनि व्यक्ति करते है जो नाट्य में न मिले ऐसा न तो कोई ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, योग और न ही कोई कार्य हो सकता है। इस नाट्य में सभी शास्त्रों सभी प्रकार के शिल्पों और विविध प्रकार के कार्यों का सन्निवेष है इसलिए भरतमुनि ने नाट्य की रचना की है। भरतमुनि नाट्य को लोक का मनोविनोद कर्ता और लोकरंजनकारी भी कहते है। भरतमुनि नाटय को वाड्.मय का सर्वश्रेष्ठ रूप मानते है।

भरतनाट्य को मनुष्यों के कर्म को आधार देने वाला, हितकारी उपदेशों का जनक, धर्म, यष एवं आयु का संवर्धक, बुद्धि का विकास करने वाला निरूपित करके उसकी समग्र वाड्.मय में सर्वोपकारिता सिद्ध करते है ये अवधारणाएं नाट्य को एक ऐसे समग्र काव्य के रूप में सिद्व करती है, जिसमें समस्त कलाओं का भी सहज ही अन्तर्भाव हो जाता है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *नाट्यशास्त्र – भरतमुनि*
2. *दषरूपक – धनञ्जय*
3. *भरत और भारतीय नाट्यकला – सुरेन्द्रनाथ दीक्षित*